

सारसंग

वर्तमान समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है। वह अब कड़िवादी रूपी परम्पराओं की बेड़ियों अब पूर्णतः उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझने हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उस लगन है कि सारी चीज़ें मिथ्या हैं जो उसके अस्तित्व को बचाने से रोकती हैं। वह युग से इन बेड़ियों को उतार फेंकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कलिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – 'घर का पुरुष बने ही काउच का कदबू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह सञ्चालन में लगा देती है। बीच में नीकरी भी कर लेती है। जरूरी फोर्टिंग फोन, औपचारिक-अनीपचारिक, मुलाक़ातें उसकी दिनचर्या के अंग हैं। हर मोर्चे पर वह गनट की मौत तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसी मीम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।'

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका मन्दकान्ता जी कहती हैं- जितनी नृषि इस एक रात में मिली है। बोली कि मानूँ? किसको दूँ महत्व? (उसकी आर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है, धीरे-धीरे) उसका एक स्पर्श से गड़क उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँव का अनुभव होता था जब कभी कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुँझलाती थी बेचार चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़-फाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में वीणा के तार टूटते थे, बैचैन - सी शीश पर करवटें बदलती थी (एक पंजा बढाते हुए) और जान ला कि पुन्हास मुँह नीच लेने का मन होता था (बूड़िया और आगूषण खनखानते हैं तो कलाई की आर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को समालने की चेष्टा करती है उमम से) बहुत अनुभवी है प्रताप जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।'

'भारतीय समाज में स्त्री को दोगम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केंद्रित सोच तक ही सीमित हैं।'

डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – 'हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियाँ के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। जैसाई (नन्नु मण्डरी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण

बलदेव वेद) और विश्रम (कुलपूषण) आदि कहानियों का यह पति-पत्नी साथ-साथ-सम्बन्ध साहस वह शादी से पूर्व ही या शादी के बाद समाज से लिया गया है। त्रिकोण से पत्नी की पर-पूर्ण के एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक गहरी समझना बनती है।'

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह लेती है और पुरुष उसे प्रेम आस्था सम्पूर्ण ईमानदारी में नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक ईमानदार पति के प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति रूप धारण करके उसको पति के भाव उत्तारों के लिए तैयार करती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्मे है क्योंकि नारी वह संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं को दबावाती करता है तो वह फिर नागिन, कान्ची बनकर दूट पड़ती है। अगर नारी कोमल रूप से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए बड़ी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी के रूप से झूठती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के प्रत्येक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिरुचियाँ, साथ नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को समी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्डा, दमिता वासनाएँ उमरने लगती हैं जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझादार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुंसक प्रवृत्ति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ बुर-बुर होकर रह जाती हैं जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई सत्तान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है -

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है। शीलवती (आवेश से) निमायी है मैंने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निमान में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीज़ों के लिए उस पति-ओक्काक

सारांश

वर्तमान समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है, वह अब रूढ़िवादी रूपी परम्पराओं की बेड़ियों अब पूर्णतः उत्तार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी चीजें मिथ्या है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह युगों से इन बेड़ियों को उत्तार फेंकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कलिया बही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – “घर का पुरुष गले ही काउच का कदू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीच में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मोटिंग, फोन, औपचारिक-अनौपचारिक, मुलाक़ातें उसकी दिनचर्या के अंग हैं। हर मोर्चे पर वह गनट की भौति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मौम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।”

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती हैं— जितनी तृप्ति इस एक रात में मिली है। बोलो कि मानूँकिरसको दूँ महत्व?(उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है, धीरे-धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कभी कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुँझलाती थी बेचारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़-फाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन – सी शैया पर करवटें बदलती थी (एक पंजा बढाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मुँह नोच लेने का मन होता था (बूडिया और आभूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को संभालने की चेष्टा करती है उमंग से) बहुत अनुभव है प्रतीति जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।”

“भारतीय समाज में स्त्री को दायम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केंद्रित सोच तक ही सीमित है।”

डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – “हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से ‘एडजस्ट’ न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। ऊँचाई (मन्नू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण

बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियों पर पुरुषों के साथ यौन-सम्बन्ध चाहे वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद जवान सहेलता से लिखा गया है। ‘मिकोफ’ में पत्नी को घर – पुरुष के साथ एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन मायामें संभावना बनती है।”

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूज लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, सम्पूर्ण, इमान्दारी से सारे भार नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। नतीजतन अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिक्रिया उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार हो जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बड़ी ही सौन्दर्यशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दमनाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पड़ती है। अगर नारी कोमल भाव से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पूर्ण रूप से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिरुचियाँ, सोच नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्टा, दमित वासनाएँ उभरने लगती हैं जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुंसक प्रवृत्ति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ बुर-बुर होकर रह जाती हैं जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक दम्पत्य की कुछ मर्यादा भी होती है। शीलवती (आवेश से) निभायी है मैंने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निगाने में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक

सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटक में दाम्पत्य चित्रण

13

नविका देवी

संस्कृत
कल्पवृक्ष समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है। वह अब कल्पवृक्ष की परम्पराओं की बेहियों अब पूर्णतः उत्तार चुकी है। आज का समाज और समाज की अन्तर्गतता को समझने हुए समाज समन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि स्त्री की शक्ति मिश्रण है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह पूर्ण से इन बेहियों को उत्तर देने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कपूरिणी बड़ी प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार - 'धर का पुरुष भले ही कालवृक्ष बन कण्डू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह सम्भालन में लगा देती है। बीच में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मोटिव, फोन, औपचारिक-अनौपचारिक, मुलाकातें उसकी दिनचर्या के अंग हैं। हर मोर्चे पर वह मजदूरी भी तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे भीम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।'

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती हैं- जितनी वृद्धि इस एक रात में मिली है। बोले कि मार्क्सकिंसकी हैं महत्व? (उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बहती है, धीरे-धीरे) उसके एक रसार्श से भड़क उठा यह लावा जो जितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कभी कुछ नहीं भाता था। बिना बात महतरिका पर झुंझलाती थी बेचारे चन्द्रकाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़-फाड़कर फेंकती थी, दूत रागों में बीणा के तार टूटते थे, बेचैन - सी सैया पर कचरटे बदलती थी (एक पंजा बड़ाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा भूत नौच लेने का मन होता था (वृद्धिया और आभूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को समालने की चेष्टा करती है उमग से) बहुत अनुभवी है प्रतीत जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।'

'भारतीय समाज में स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केंद्रित सोच तक ही सीमित है।'

डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार - 'हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिलें जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। ऊँचाई (मन्नु भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण

बलदेव वेद) और निश्चय (कुलमृषण) आदि कहानियों पर पर-पुरुष साध गीन-समन्ध चाहें वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद अत्यन्त सहजता से लिखा गया है। 'मिकोफ' में पत्नी को पर-पुरुष के साथ एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन धारण सम्भावना बनती है।'

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूज लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समर्पण, ईमानदारी, ये सारे नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। नाश अगर पुरुष के प्रति पृथी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिष्ठा उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ देवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको गीत के घाट उतारने के लिए तैयार भी हो जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बड़ी संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पड़ती है। अगर नारी कोमल भाव से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए बड़ी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पूर्ण रूप से झूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिरुचियाँ, सोच नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ड, दमित वासनाएँ उभरने लगती हैं जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुंसक प्रवृत्ति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ चूर-चूर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है -

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है। शीलवती (आवेश से) निभायी है मेने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक

सारांश

सर्वप्रथम सम्बन्ध में नारी अब अधिकांश रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है। वह अब कठिनाई कभी परम्पराओं की बंधियों अब पूर्णतः उत्तार चुकी है। आज का समय और समाज की आवश्यकता को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को सम्बन्ध की पूरी कोशिश कर रही है। उसे समझा है कि सारी छोटी-छोटी कठिनाई है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह युगों से इन बंधियों को उत्तार फेंकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ-कुछ तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कलिया की प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार - "घर का पुरुष भले ही काउच का कदू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीघ में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मोटिंग, फोन, औपचारिक-अनौपचारिक मुलाक़ातें उसकी दिनचर्या के अंग हैं। हर मोर्चे पर वह गनट की भांति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मीम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।"

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती हैं- जितनी तृप्ति इस एक रात में मिली है। बोलो कि मानूँ किसकी दूँ महत्व? (उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है, धीरे-धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कभी कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्तरिका पर झुंझलाती थी बेधारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़-फाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में दीणा के तार टूटते थे, बैचैन - सी शैया पर करवटें बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मुँह नौच लेने का मन होता था (चूड़िया और आभूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को संभालने की चेष्टा करती है उमंग से) बहुत अनुभवी है प्रतोष जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।"

"भारतीय समाज में स्त्री को दायम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित हैं।"

डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार - "हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिलें जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। जैचौड़ी (मन्नू भण्डारी) ठेका (दिष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण

बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियों पर यह स्पष्ट है। साथ यौन-सम्बन्ध चाहें वह शादी से पूर्व ही या शादी के बाद सम्बन्ध से लिखा गया है। 'मिकोफ' में पत्नी को घर-दूरस्थ एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन सम्बन्ध सम्भावना बनती है।"

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूजित लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, सम्पन्न, ईमानदारी, प्यार नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिक्रिया उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार हो जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बड़ी ही संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर दूट पड़ती है। अगर नारी कोमल भाव से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पुरुष से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव का अनेक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिलाषियाँ साथ नहीं मिल पा रही हैं तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्डा, दमित वासनाएँ उभरने लगती हैं जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुंसक प्रवृत्ति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ, धृष्ट-धृष्ट होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई सतान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है -

ओक्काक : (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है। शीलवती : (आवेश से) निभायी है मैंने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपका कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक

सारांश

वर्तमान समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर हो गई है, वह अब रुढ़िवादी रूपी परम्पराओं की बेड़ियों अब पूर्णतः उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी चीजें मिथ्या हैं जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती हैं। वह युग से इन बेड़ियों को उतार फेंकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में भमता कालिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार - "घर का पुरुष भले ही काउच का कदू बना रहे स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीच में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी कीटिंग, फोन औपचारिक-अनौपचारिक, मुलाकातें उसकी दिनचर्या के अंग हैं। हर मोर्चे पर वह गनट की भीति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे नीम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।"

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका धन्वकान्ता जी कहती हैं- जितनी वृत्ति इस एक रात में मिली है। बोलो कि मर्नु? किसको दूँ महत्व? (उसकी ओर देखती रहती है)। एक ओर बढती है, धीरे-धीरे) उसके एक स्पर्श से मडक उठा वह लावा जो जिलाने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कभी कुछ नहीं माता था। बिना बात महत्तरिका पर झुंझलाती थी देवारे जगजगत् को आहार नहीं मिलता था, धिन्नलिख काड-फाडकर फंकेती थी, द्रुत रागो में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन - सी सीया पर जलवटें बदलती थी (एक पंजा बढाते हुए) और जान ली कि तुम्हारा मुँह नोच लेने का मन होता था (वृद्धिया और आगूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कुराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पडती है। अपने को सभालने की चेष्टा करती है उमग से) बहुत अनुभवी है प्रतीति जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।"

"भारतीय समाज में स्त्री को दायम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केंद्रित सोच तक ही सीमित हैं।"

डॉ० वेदप्रकाश जमिताम के अनुसार - "हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिलें जहाँ एक दूसरे से 'एडजस्ट' न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। उँचाई (मन्नु मण्डारी) ठेका (विष्णु प्रमाकर) त्रिकोण (कृष्ण

बलदेव वेद) और निश्चय (कुलभूषण) आदि कहानियों पर पर-पुरुष के साथ यौन-सम्बन्ध चाहे वह शादी से पूर्व हो या शादी के बाद अत्यन्त सहजता से लिखा गया है। गिकोफ में पत्नी को पर-पुरुष के साथ एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नवीन धारणा समावना बनती है।"

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूजन लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, सम्पूर्ण ईमानदारी ये सारे भाव नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। नारी अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिशत उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको मीत के घाट उतारने के लिए तैयार हो जाती है, जितनी धुप है उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी बड़ी ही संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पडती है। अगर नारी कामल माक से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चढी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पूर्ण रूप से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिरुचियाँ, रास नही मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होन लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को समी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती है जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुंसक प्रवृत्ति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ बुर-बुर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई सतान नहीं होती और दोनों पात्र को समाज की बातों को मानना पडता है परन्तु ज्यादा पीडित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है -

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है। शीलवती (आवेश से) निभायी है मैने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को चित्रण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको कघोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक